महाबल मलया सुन्दरी

चन्द्रावती नगरी के राजा वीरधवल की दो रानियाँ थीं—चम्पकमाला और कनकमाला। एक दिन संध्या के समय राजा महल की छत पर खड़ा किसी विचार में डूबा हुआ था। अचानक रानी चम्पकमाला बोली—

अगली प्रातः राजा राजसभा में जाने को तैयार हो रहा था तभी एक दासी भागती हुई राजा के पास आई—

महाराज ! रानी जी को..... कुछ हो गया ?

राजा तुरन्त रानी के महल में पहुँचा। रानी चम्पकमाला बेहोश पड़ी थी। राजा ने उसे झकझोरा—

महारानी क्या हुआ ? उठिए..... आँखें खोलिए।

परन्तु रानी ने आँखें नहीं खोलीं।

तब तक राजवैद्य आ गये थे। रानी की नाड़ी देखी तो हाथ हिलाकर उदास स्वर में बोले—

राजन ! कुछ नहीं रहा.....।

क्या रानी नहीं रही ? अब मैं भी जीवित रहकर क्या करूँगा।

राजा बच्चों की तरह रोने लगा। मंत्री, पुरोहित आदि राजा को सांत्वना देने लगे।

संध्या तक रानी की चिता लेकर लोग नदी तट पर आये। चन्दन की चिता पर रानी का शव रखा। तभी राजा की नजर पास की नदी में बहते हुये एक संदूक पर पड़ी। राजा ने कहा—

अरे...देखो जरा ! इस सन्दूक में क्या है ?

सेवकों ने सन्दूक नदी से निकाला और उसे खोला। सभी चौंक पड़े।

अरे ! रानीजी तो मूर्च्छित पड़ी हैं ?

तो फिर चिता पर कौन है ?

तब तक चिता से धुँआ उठकर आकाश की तरफ जाने लगा। शव वहाँ से गायब था।

अरे ! यह क्या माया है ?

कुछ देर बाद रानी को होश आ गया। वह सन्दूक से बाहर निकलकर पेड़ के नीचे बैठ गई। उसने बताया—

महाराज ! मैं प्रातः वन-भ्रमण के लिए गई थी, उसी समय किसी राक्षस ने मुझे उठा लिया।

और एक विशाल गुफा में ले जाकर पटक दिया। वह बोला—

मैं शाम तक लौटकर वापस आऊँगा और तेरे साथ विवाह रचाऊँगा। तब तक तू यहीं रह।

इतना कहकर राक्षस कहीं चला गया।